

सिर्फ परिवर्तन से ही...!!

आज हम परिवर्तन की बात करते हैं। परिवर्तन हर पल हो रहा है। अभी दिवाली आयी, पूर्व दिवाली में हमने कई संकल्प किये थे, वो भी परिवर्तन हुआ और अभी दूसरी दिवाली आई। ऐसे ही हर चीज़ परिवर्तनशील है। कल था वो आज नहीं, आज है वो कल नहीं रहेगा। परिवर्तन कुदरत का नियम है। तो हमें देखना है कि हम समय के साथ कितना परिवर्तित हो रहे हैं? चाहते सभी हैं, कोई लक्ष्य बनाता है कि मैं अपने जीवन में टॉपर रहूँगा, मैं ये लक्ष्य हासिल करूँगा, कई तो उस लक्ष्य को पाने में सफल भी हो जाते हैं, पर कई चाहते हुए भी उस लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाते। तो उसकी वजह क्या है, यह हम जानें।

हम चाहते हैं कि हमारा जीवन हर पल खुशियों से भरा हो। इस पल हम खुश भी हैं, फिर अगले पल हम नाखुश क्यों हो जाते हैं? क्या हमने कभी ऐसा सोचा कि हमारी खुशी किस वजह से विचलित हुई? क्योंकि हमने अपने जीवन में परिवर्तन को



- डॉ. कु. गंगाधर

जिस रीति से स्वीकारना चाहिए, वहाँ कहीं न कहीं चूक हो रही है। परिणामस्वरूप हमारी खुशी नाखुशी में परिवर्तित हो जाती है। परिवर्तन एक कला है, उसको हमें यूँ करने के तौर तरीकों पर गौर करना होगा। अगर हमें परिवर्तन करने की कला आ जाये तो हम नर से नारायण भी बन सकते हैं। जब कोई स्कूल में बच्चा दाखिल होता है, पढ़ाई करना आरंभ करता है, तो उसका कोई न कोई लक्ष्य होता है। ठीक वैसे ही, यहाँ पर भी हमें हमारा लक्ष्य मनुष्य से देवत्व प्राप्त करना है। या यूँ कहें कि युक्तियुक्त होकर असुर से देवता बनना हमारा लक्ष्य है। क्योंकि वर्तमान जो संसार है वो सब आसुरी लक्षणों से युक्त हो चुका है। मनुष्य से देवता बनना या असुर से देवता बनना - यह क्या है? यह परिवर्तन की प्रक्रिया है। अगर परिवर्तन न हो तो मनुष्य से देवता कैसे बनेंगे! हमारा लक्ष्य पूरा कैसे होगा! जिसको हम पुरुषार्थ कहते हैं। पुरुषार्थ है क्या? परिवर्तन है। परिवर्तन का नाम ही पुरुषार्थ है। तब तो यहाँ परमात्मा हमें कहते हैं कि पुरुषार्थ तेज़ करो। 'पुरुषार्थ तेज़ करो' कहने का अर्थ क्या है? परिवर्तन की रफ्तार को बढ़ाओ। परिवर्तन की प्रक्रिया को तेज़ करो। पहले हम चले थे उतरती कला में, अभी हमें जाना है उतरती कला से उड़ती कला में। उड़ती कला में जायेंगे कैसे? जब हमें परिवर्तन की कला आयेगी। मुख्य हमारा पुरुषार्थ है, वह इसी बात का है कि हमारे में परिवर्तन की कला आनी चाहिए।

जिस स्थान पर आप रहते हैं, वहाँ पर आपका प्रभाव नहीं पड़ता, या जिस ऑफिस में आप काम करते हैं, वहाँ लोग आपको सहयोग नहीं देते, कई बातों में रुकावट डालते हैं और सेवा में ज़्यादा सफलता नहीं मिलती, क्यों? क्योंकि आपमें परिवर्तन नहीं है। हमारे जीवन में परिवर्तन ऐसा प्रत्यक्ष हो कि लोगों को मालूम पड़े कि हम बदल चुके हैं। पहले हमारा जीवन क्या था, और अभी क्या बन चुका है! तब ही घर वालों पर प्रभाव पड़ेगा। परिवर्तन एक ऐसी चीज़ है, जिसे देखकर सब खुद बोलेंगे कि पहले हमारे बच्चे में ये आदतें थीं, अभी इतना बदल गया है। पहले घर में काम नहीं करता था, गुस्सा करता था, लोगों के साथ उसका व्यवहार ऐसा था; अभी उसमें बहुत बदलाव आ गया है। जितना-जितना हममें परिवर्तन होगा, परमात्मा को प्रत्यक्ष भी हम उतना ही कर सकेंगे। तब मुरलियों में परमात्मा कहते हैं कि बच्चे, बाबा की यह बात नहीं मानेंगे! बात मानने का अर्थ क्या है? परिवर्तन हो जाना। यह संगमयुग क्या है? सतयुग से लेकर संगमयुग तक हम जो कहानी पढ़ते हैं, सुनते हैं - यह क्या है? परिवर्तन। संगमयुग क्या है? परिवर्तन का समय। कलियुग जा रहा है और सतयुग आ रहा है। हमें परिवर्तन होना है। अभी हमें कलियुगी से बदलकर सतयुगी बनना है। यह सारा ज्ञान हमने किसलिए लिया? कलियुग की आदत को छोड़ अपने को सतयुग के लायक बनायें, क्योंकि समय बदलने वाला है। ज्ञान का मुख्य सार या नींव या धुरी यह है कि हमें परिवर्तन करना है। कई बार परमात्मा से पूछा जाता है कि बाबा, महापरिवर्तन कब होगा? सतयुग कब आयेगा? तो बाबा कहते हैं, परिवर्तन की प्रक्रिया तो पूरी हो चुकी है। ऐसा आमतौर पर बाबा कहते थे, लेकिन अब बाबा हमसे पूछते हैं कि आप सब तैयार हो? आप उस परिवर्तन के आधार मूर्त और उद्धार मूर्त हो। सारे सृष्टि का परिवर्तन आपके परिवर्तन पर टिका हुआ है। आपके कारण रुका हुआ है। अगर आप परिवर्तित नहीं होंगे

- शेष पेज 3 पर...

व्यक्त भाव से ऊपर उठकर अव्यक्त पालना का अनुभव करो

इस तन में रहते मन को बाबा में लगाने से वायुमण्डल बड़ा अच्छा हो जाता है। साकार बाबा निमित्त है, शिवबाबा कहता है, मैं इनका शरीर लोन लेता हूँ तुम्हें दृष्टि देने के लिए। उसकी दृष्टि से इतनी सुन्दर रचना हुई है। जब साकार बाबा अव्यक्त हुआ तो सबके मन में यह प्रश्न उठा कि अब क्या होगा और कैसे होगा? तो गुलज़ार दादी ने जब भोग लगाया तो बाबा आया और सबके प्रश्नों के उत्तर दिये। तब से अभी तक अव्यक्त वतन से गुलज़ार दादी के द्वारा हम सब अव्यक्त को साकार में अनुभव कर रहे हैं।

अभी भी सब बच्चे दूर बैठे भी अव्यक्त पालना का अनुभव करते हैं। बाबा कहते, बच्चे सिर्फ व्यक्त भाव को छोड़ो, व्यर्थ रूप से सोचना छोड़ो। बाकी बाबा का काम बाबा जाने। बाबा आज दिन तक हमारी अच्छी सम्भाल कर रहा

है। जहाँ भी हम होंगे, बाबा हमारे साथ है। दूसरा - बाबा ने जो ड्रामा की नॉलेज दी है ना, तो ड्रामा अनुसार जो जैसे चल रहा है, हमारी स्थिति को अडोल अचल बना रहा है। आप सभी बाबा के बच्चे हो और मेरे बहन भाई हो, तो हरेक ऐसा फील करता है ना कि मैं आपकी बहन हूँ या आप मेरी बहन हो, यह भाई है। सब मेरे हैं, क्योंकि हम एक बाप के बच्चे हैं तो एकमत है। मनमत न हो इसके लिए सदा श्रीमत पर चलते रहें तो हमेशा एकमत हो चल सकेंगे। सारे कल्प में अभी ही ऐसा मौका मिला है, जो सभी आपस में एकमत होकर रहते और अपनी-अपनी कमाई जमा करते हैं। हमारी इस पढ़ाई में बहुत कमाई जमा हो रही है। सतयुग में आने की तैयारी यहाँ करनी है क्योंकि जब यह पढ़ाई पूरी हो जायेगी तो हम सभी आत्मायें वापस घर जायेंगी, फिर वापस सतयुग में आयेंगी। तो अव्यक्त होकर

के भी बाबा आज दिन तक कैसे पालना दे रहा है और हम बच्चे उसी अव्यक्त पालना से अपनी स्थिति को अच्छे से अच्छा बना रहे हैं। बहुत ईज़ी राजयोग है, लेकिन ऐसे भी नहीं कि सहज कहके अलबेले हो जाएं, नहीं। अलबेलेपन का अंश न हो, नहीं तो कमाई से वंचित रहेंगे। इसके लिए साक्षी होके देखो, जैसे अभी हम एक दो को स्नेह की दृष्टि से देखते मिलन मना रहे हैं, ऐसे सतयुग में थोड़ेही होगा! यहाँ बैठे बुद्धि बाबा के साथ है, जहाँ बाबा वहाँ बच्चे। मैं समझती हूँ कोई नई-नई आत्माओं को ऐसा साक्षात्कार होता है, उनको भी अनुभव हो जाता है।



दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

बुद्धि को पॉज़ीटिव की ओर ले जाने का अभ्यास करें



दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

कोई भी माया की हलचल होती है तो बाबा ने हम लोगों को पक्का कर दिया है कि कोई भी बात हो जाये तो उससे पाठ पढ़ लो। बात को उस रीति से नहीं देखो - क्यों हुई, कैसे हुई, इसने यह बात क्यों की, इससे यह क्यों हुआ, मेरे से ही यह क्यों हुआ... ऐसे जो क्वेश्चन उठते हैं वो हलचल मचाते हैं। हाय-हाय का थोड़ा-सा भी असर होता है तो उसमें देखो कि इसमें हमको फायदा क्या हुआ, यह बात हमको कौन-सा पाठ पढ़ा रही है? यदि किसी ने आपकी ग्लानि कर दी, कोई गाली दे रहा है, इन्सल्ट कर रहा है तो बाहर से यह बुरी बात दिखाई देती है लेकिन कोई हमारी इन्सल्ट करता है, ग्लानि करता है, गाली देता है, मुझको नीचा करके खुद को ऊँचा उठाता है तो वास्तव में यह पेपर हमें सहन शक्ति का पाठ पक्का कराता है। अगर इस विधि से देखेंगे तो क्यों-क्या उठेगा ही नहीं। और उस रीति से देखेंगे, मेरे साथ ही क्यों होता है, मेरा भाग्य शायद ही ही नहीं, मेरा ड्रामा में ऐसा ही पार्ट है, मेरे को शायद इतना ऊँचा बनना ही नहीं है... तो ऐसे नेगेटिव संकल्प को पॉज़ीटिव रूप से नहीं देखते हैं, सिर्फ नेगेटिव को देख रहे हैं तो क्वेश्चन मार्क उठते हैं।

बाबा ने एक बहुत अच्छा मिसाल दिया था, जैसे गुलाब का फूल है, खुशबू कितनी अच्छी होती है, लेकिन पैदा कहाँ से होता है? उसकी धरनी में कितनी गन्दी खाद होती है। गन्दी खाद से कितनी अच्छी खुशबू ले लेता है। खाद है तो खराब ना। जब खाद डालते हैं तो नाक बन्द करके चलते हैं। और जब गुलाब का पुष्प खुशबू लेकर निकलता है तो हम नाक पर रखते हैं, सूँघते हैं। तो हमारी रचना में भी इतना अक्ल है कि खाद से भी अपनी खुशबू ले ली। तो जब कोई बात हो जाती है तो क्या हम गुलाब के पुष्प के

माफ़िक बुरी बात से भी अच्छाई नहीं ले सकते? जब हमारी रचना में इतना अक्ल है तो हम तो मास्टर सर्वशक्तिवान् हैं ना! जब वो कर सकता है तो हम क्यों नहीं कर सकते? इसीलिए नेगेटिव को छोड़कर पॉज़ीटिव के तरफ हमारी दृष्टि जानी चाहिए। यह अभी से हमको संस्कार डालने पड़ेंगे तब ही विनाश के समय हमारी बुद्धि नेगेटिव की तरफ न जाकर पॉज़ीटिव की तरफ जायेगी। अगर अभी से हमारा बहुत काल का अभ्यास नहीं होगा, नेगेटिव देखते हुए उससे पॉज़ीटिव उठाने की आदत नहीं होगी, संस्कार नहीं होंगे तो उस समय हमको धोखा मिल जायेगा। इसीलिए विनाश के लिए तैयारी क्या करनी है? एक तो त्रिकालदर्शी स्टेज को पक्का करो, नथिंगन्यू के पाठ को पक्का करो और कोई भी ऐसी चीज़ देखो तो उसके नेगेटिव को बदलकर पॉज़ीटिव की तरफ बुद्धि जाये - यह अभ्यास अभी से चाहिये। यह तब होगा जब ड्रामा की प्वाइन्ट प्रैक्टिकल में पक्की होगी। यदि वैसे ही वर्णन करेंगे कि हाँ, ड्रामा का ज्ञान बहुत अच्छा है, ड्रामा की प्वाइन्ट बहुत फायदा करती है - ऐसे तो फायदे की बहुत सी बातें हैं लेकिन यह प्वाइन्ट ही है या प्रैक्टिकल है? हर प्वाइन्ट को आप यन्त्र के रूप से यूँ कर सकते हो।

ड्रामा माना फुल स्टॉप। ड्रामा का ज्ञान हमको फुलस्टॉप याद दिलाता है। जिस समय कोई बात होती है, उस समय फुल स्टॉप याद आये। वैसे ड्रामा याद है, लेकिन समय पर फुल स्टॉप नहीं लगा, फुल स्टॉप लगाना चाहते हैं और बन जाता है क्वेश्चन मार्क। तो टाइम पर तो काम में नहीं आया। जैसे कहानी है एक तोता था, जिसका नाम था गंगाराम। उसको कहा नल पर नहीं बैठना लेकिन वह नल पर बैठकर बोल रहा था - 'गंगाराम नल पर नहीं बैठना।' तो यह क्या हुआ? हमें परिस्थिति के समय ड्रामा-ड्रामा कहना है या फुल स्टॉप लगाना है? तो यन्त्र माना जो समय पर काम आये। तो ज्ञान तलवार में जंक न लगे। ज्ञान

तलवार से पेपर में पास हो जाओ। तो अभी से चेक करो कि जिस समय कोई बात आती है उस समय फुल स्टॉप लगता है? ड्रामा की प्वाइन्ट प्रैक्टिकल में यूँ होती है? यदि नहीं तो उसका निवारण सोचो। अन्तिम सीन जो होगी, एक्सट्रीम चीज़ जो होगी वो ज़्यादा समय नहीं चलेगी। आपका फाइनल पेपर जो होना है, वह एक सेकण्ड का होना है। क्वेश्चन भी बाबा ने सुना दिया है - 'नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप।' एक सेकण्ड में बॉडी कॉन्शियस में आ गये तो सेकण्ड तो बीत गया। तो पास कैसे होंगे? इसीलिये बाबा कहते हैं कि लास्ट समय की तैयारी के लिए आप अभी से अपनी तैयारी करो। जैसे स्कूल में पहले 3 मास में फिर 6 मास में पेपर होता है और फिर फाइनल पेपर होता है ताकि बच्चों को पता चले कि हम किस-किस बात में कमज़ोर हैं, उसको ठीक कर लें। इसी रीति से हमको अपना ही टीचर बनकर अपनी चेकिंग आपेही करनी चाहिए। पेपर तो ड्रामानुसार सबके पास आता ही है, कोई के पास पेपर न आये तो पास होकर सूक्ष्मवतनवासी हो जाये। हरेक को अपने-अपने ढंग का पेपर आता है और आना ही है। जितना आगे बढ़ेंगे उतना पेपर गुह्य होता जायेगा। लेकिन हम कहाँ तक उस पेपर में प्रैक्टिकल में पास होते हैं - यह हमको चेक करना है। दूसरा चेक करेगा तो बॉडी कॉन्शियस के संस्कार होने के कारण उसे टालने की कोशिश करेंगे, कहेंगे मेरी गलती नहीं है, इसने ऐसे किया तो मैंने ऐसे किया। दूसरे के ऊपर टालेंगे। यह बॉडी कॉन्शियसनेस का बीज है। इसलिये दूसरा शिक्षा देता है तो पता नहीं चलता है। अपने आपको जो हैं, जैसे हैं - पता होता है, मन खाता है। भले उस समय पता नहीं भी पड़े कि मैं राइट हूँ या रॉन्ग हूँ! लेकिन जब बात पूरी हो जाती है तो मन में फील होता है कि यह ठीक नहीं है। अलबेलेपन में चला देते हैं कि यह ठीक है, ऐसे तो चलता ही है, सब ऐसे ही तो चल रहे हैं। फिर हम उसको टाल देते हैं, लेकिन मन में आता ज़रूर है।